International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

# भारत में गठबंधन सरकारों की राजनीति

मोनिका

एम.ए., एम.फिल, एवं नेट (राजनीति विज्ञान)

**शोध आलेख सारः** भारत में गठबंधन की राजनीति एक अपरिहार्य आवश्यकता बन चुकी है। चूंकि 1977 में प्रथम बार भारत में जनता पार्टी के नेतृत्व में गठबंधन सरकार बनी थी जो जल्दी ही धराशायी हो गई, परन्तु 2014 में हुए लोकसभा चुनाव के बाद गठित मोदी सरकार एक पूर्ण बहुमत की सरकार हैं, जो संसदीय लोकतंत्र के लिए एक नया प्रतिमान मानी जाती है। यह एक ऐसा राजनीतिक प्रयोग है जो यह बात सत्य सिद्ध करता है कि बहुमत की स्थिति में भी गठबंधन संभव है। हालांकि 1989 के बाद निरन्तर भारत में गठबंधन की राजनीति में नये–नये प्रयोग होते रहे हैं और वर्तमान गठबंधन सरकार भी एक नया प्रयोग है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत में गठबंधन सरकारों की उत्पति एवं विकास की राजनीति पर प्रकाश डालता है।

**मूलशब्दः** कांग्रेसवाद, राजनीतिक एकरूपता, क्षेत्रीयदल, त्रिशंकु संसद, अस्पष्ट जनादेश, गठबंधन की राजनीति।

**भूमिकाः–** चूंकि स्वतंत्रता के बाद लम्बे समय तक केन्द्र व राज्यों की राजनीति में कांग्रेस का प्रभाव रहा और इसी दल की सरकारें बनती रही। परन्तु राज्यों की राजनीति में 1967 में हुए चौथी लोकसभा चुनाव व कई राज्य विधानसभा के चुनाव में कुछ परिवर्तन नजर आया। इस चुनाव को राज्यों की राजनीति के लिए एक क्रांतिकारी घटना माना जा सकता है। पहली बार राज्यों में कांग्रेसवाद को चुनौती मिली और कई राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें बनी। यह कांग्रेस के भविष्य के लिए आने वाले खतरे का अहसास था जो 1977 में साकार हुआ और केन्द्र में जनता

पार्टी के नेतृत्व की गठबंधन सरकार बनी। यद्यपि यह सरकार अपने अर्न्तविरोधों के कारण जल्दी ही धराशायी हो गई, लेकिन इसने देश के मतदाताओं के सामने कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत कर दिया।

**1989 से 2009 तक गठबंधन सरकारें**:— वस्तुतः 1989 में हुए लोकसभा के चुनाव में गठबंधन की राजनीति का नया युग शुरू हुआ और यह स्थिति 2009 तक बनी रही। इस दौरान बार—बार राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बनता रहा और बिगड़ता रहा तथा क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भूमिका ने अपनी प्रभावी राजनीतिक स्थिति का अहसास करवा दिया। इस दौर में संसदीय लोकतंत्र के सामने कई चुनौतियां उभरकर आई, परन्तु विखण्डित जनादेश की स्थिति में गठबंधन सरकों के निर्माण के सिवाय कोई दूसरा विकल्प सरकार निर्माण के लिए नहीं था। 1989 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 193 सीटें लेकर पहले तथा जनता दल 141 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रहा। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी केवल 86 सीटों पर सिमट गई। यह त्रिशंकु लोकसभा की स्थिति थी। इस राजनैतिक परिदृश्य में 141 सीटें लेने वाले जनता दल ने राष्ट्रीय मोर्चे का गठन किया और भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से विश्वनाथ प्रताप सिंह को प्रधानमंत्री बनाया गया। लेकिन आरक्षण की राजनीति ने इस सरकार को राजनैतिक अस्थिरता के वातावरण में धकेल दिया और कुछ दिन के लिए श्री चन्द्रशेखर जी को प्रधानमंत्री पद पर आसीन किया गया। यह गठबंधन सरकार जल्दी ही धराशायी हो गई और 1991 में 10वीं लोकसभा के चुनाव करवाने पड़े।

जब भारत में 1991 में 10वीं लोकसभा के चुनाव हुए तो इस बार कांग्रेस 225 सीटों के साथ प्रथम तथा भारतीय जनता पार्टी 119 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रही। इस बार जनता दल केवल 55 सीटों पर सिमट गया। इस बार कांग्रेस ने नरसिम्हा राव के नेतृत्व में गठबंधन सरकार का निर्माण किया। सांसदों की खरीद—फरोख्त करके सरकार ने अपना कार्यकाल तो पूरा कर लिया लेकिन

राजनैतिक भ्रष्टाचार रूपी जहर संसदीय लोकतंत्र में घुल गया जो आज भी भारत की संसदीय व्यवस्था के लिए एक खतरा बना हुआ है।

1996 में हुए 11वीं लोकसभा चुनाव मे कांग्रेस 141 सीटों पर सिमट गई तथा भारतीय जनता पार्टी को 162 सीटें मिली। इस बार बड़ी पार्टी होने के नाते भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने का मौका मिला, परन्तु यह सरकार 13 दिन ही चली और देश में फिर से गठबंधन सरकार के निर्माण तेज हो गए। इस राजनैतिक अस्थिरता के वातावरण में देवगौड़ा तथा इन्द्रकुमार गुजराल को प्रधानमंत्री पद पर बैठने का अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन 1998 में देश में फिर से लोकसभा चुनाव का बिगुल बज गया। इस चुनाव के बाद भारतीय जनता पार्टी को 177 तथा कांग्रेस को 140 सीटें मिली। इस राजनीतिक परिदृश्य में भारतीय जनता पार्टी को पुनः सरकार बनाने का अवसर मिला और श्री अटलबिहारी वाजपेयी को दूसरी बार प्रधानमंत्री की शपथ दिलवाई गई। इस बार इस गठबंधन सरकार का कार्यकाल 13 महीने रहा।

1999 में भारत में पुनः 13वीं लोकसभा के चुनाव का शंखनाद हुआ। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को 182 तथा कांग्रेस को 114 सीटें मिली। इस चुनाव में बड़ी पार्टी होने के नाते तीसरी बार श्री अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री के रूप में सरकार गठन का अवसर मिला। इस बार वाजपेयी सरकार अपना कार्यकाल पूरा करने में सफल रही।

भारत में 2004 में हुए 14वीं लोकसभा के अवसर पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन.डी.ए) तथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) चुनावी अखाड़े में उतरे। चुनावी पूर्व गठबंधनों का फायदा लेने के लिए कांग्रेस तथा भारतीय जनता पार्टी ने अपनी पूरी ताकत चुनाव में लगा दी और राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक गठबंधन को केवल 186 तथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को 221 सीटें मिली। यद्यपि भारतीय जनता पार्टी 138 तथा कांग्रेस 145 सीटें लेकर लगभग समान स्थिति में रही, लेकिन

गठबंधन के रूप में यू.पी.ए. को सरकार बनाने का अवसर मिला और विखण्डित जनादेश की स्थिति में सरकार निर्माण का काम अत्यंत कठिन था फिर भी राजनीतिक खेल को खेला गया और कई वामपंथी दलों ने तथा क्षेत्रीय दलों ने कांग्रेस का साथ दिया। परिणामस्वरूप मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यू.पी.ए. गठबंधन सरकार का निर्माण हुआ। कई विरोधाभासों के बाद भी यह सरकार अपना कार्यकाल पूरा करने में सफल रही।

वर्ष 2009 में देश में 15वीं लोकसभा के चुनाव हुए। इस चुनाव में सात राष्ट्रीय तथा 362 क्षेत्रीय दलों ने अपने राजनैतिक भाग्य को आजमाया। जब चुनावी जनादेश आया तो कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को 262 सीटें मिली और इसमें से कांग्रेस पार्टी 206 सीटें जीतने में सफल रही। दूसरी तरफ राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक गठबंधन 159 के आंकड़े पर सिमट गया। इस बार भारतीय जनता पार्टी को केवल 116 सीटें मिली। तीसरे मोर्चे को इस चुनाव में काफी फायदा हुआ और वह 79 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। इस चुनाव में समाजवादी पार्टी के नेतृत्व में चौथा मोर्चा भी चुनावी अखाड़ें में था जो 27 के आंकड़े पर सिमट गया। इस विखण्डित जनादेश की स्थिति में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने फिर से मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यू.पी.ए.–2 का गठन किया। इस सरकार ने संसदीय लोकतंत्र के चेहरे पर कालिख पोत दी और घोटालों का नया इतिहास लिख दिया।

**16वीं लोकसभा के चुनाव और गठबंधन सरकारः –** जब यू.पी.ए.–2 सरकार ने देश में कुशासन और भ्रष्टाचार को चरम सीमा पर पहुंचा दिया तो भारतीय मतदाताओं ने सत्ता परिवर्तन के लिए सोचने पर विवश होना पड़ा। चुनाव की घोषणा होते ही मोदी फैक्टर ने असर दिखाना शुरू कर दिया और स्टार प्रचारक के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने जनता की दुखती नब्ज को पहचाना और जनता से भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन का वायदा किया। जनता ने मोदी की बातों पर विश्वास करते हुए कांग्रेस के मजबूत

किले को ध्वस्त कर दिया और भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने का अवसर दिया। जब 16वी लोकसभा के चुनावी परिणाम आए तो कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन 59 के आंकड़े पर सिमट गया। इस चुनाव में कांग्रेस 44 सीटें ही ले पाई। संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में कांग्रेस का ऐसा बुरा हाल पहले कभी नहीं हुआ था। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 282 सीटें जीतकर एक इतिहास रच दिया। राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक गठबंधन के रूप में उसे 336 सीटें मिली। इस चुनाव में विभिन्न दलों की राजनीतिक स्थिति इस प्रकार रहीः—

### 16वीं लोकसभा चुनाव में दलीय स्थिति

| क्र.सं. | दल का नाम | प्राप्त सीटें |
|---|---|---|
| 1 | भारतीय जनता पार्टी | 282 |
| 2 | कांग्रेस | 44 |
| 3 | शिवसेना | 18 |
| 4 | तेलगुदेशम पार्टी | 16 |
| 5 | तृणमूल कांग्रेस पार्टी | 34 |
| 6 | अन्ना द्रमुक | 37 |
| 7 | तेलंगाना प्रजा समिति | 11 |
| 8 | वाई.एस.आर.सी | 9 |
| 9 | राष्ट्रीय जनता दल | 4 |
| 10 | राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी | 4 |
| 11 | आम आदमी पार्टी | 4 |
| 12 | शिरोमणि अकाली दल | 4 |

| | | |
|---|---|---|
| **13** | झारखण्ड मुक्ति मोर्चा | 5 |
| **14** | समाजवादी पार्टी | 5 |
| **15** | जनता दल (एस) | 2 |
| **16** | जनता दल (यू) | 2 |
| **17** | वामदल | 2 |
| **18** | निर्दलीय व अन्य | 63 |
| कुल | | 543 |

**(स्रोत : निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट– 2014)**

इस तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि इस चुनाव में कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा और वह विपक्ष की भूमिका निभाने की स्थिति में भी नहीं रही। दस चुनाव में कई क्षेत्रीय दलों की भी काफी राजनीतिक क्षति हुई परन्तु तमिलनाडू के क्षेत्रीय दल अन्नाद्रमुक ने 37, तृणमूल कांग्रेस ने प. बंगाल में 34 तथा आन्ध्रप्रदेश में तेलगुदेशम पार्टी ने 16 सीटें जीतकर अपनी साख बचा ली।

**सारांश :–** अतः गठबंधन की राजनीति के रूप में भारत का संसदीय लोकतंत्र काफी उतार–चढाव देख चुका है। 1989 से 2009 तक गठित गठबंधन सरकारें या तो अस्थिर प्रकृति की रही या उनके सामने निरन्तर अस्थायित्व का खतरा बना रहा। परन्तु 2014 में भारतीय मतदाताओं ने स्थिर सरकार के पक्ष में मतदान करके भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने का अवसर दिया और इसका पूरा लाभ भारतीय जनता पार्टी ने उठाया। आज केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और इस सरकार से जनता को काफी आशायें हैं। नरेन्द्र मोदी जी ने नोटबन्दी और सर्जिकल स्ट्राईक करके, भारतीय अर्थव्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया है। यद्यपि कई मोर्चों पर सरकार को अभी लड़ना बाकी है, फिर भी सरकार से भारतीय जनता की अपेक्षा है और वह इसमें खरा उतरने का प्रयास अवश्य करेगी।

## सन्दर्भ सूची :

- धर्मचन्द जैन, **भारतीय लोकतंत्र, भाग 3,** प्रिन्टवैल पब्लिशर्स, जयपुर, 2000.
- राजेश जैन, **क्षेत्रीयवाद और भारतीय राजनीति,** भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
- एन.के गोस्वामी, **भारत में संसदीय व्यवस्था,** अविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2005.
- एन.के सिंह, **परिवर्तन और राजनीति,** राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2008.
- **दैनिक भास्कर,** रोहतक, 17 मई 2014.
- प्रीतीश नंदी, ''नये साल में बदलाव की ब्यार'', **दैनिक भास्कर, रोहतक,** 18 जनवरी 2014.
- पूनम कौशिक, ''कांग्रेस की नई समस्या'', **पंजाब केसरी,** हिसार, 13 जनवरी 2015.
- अरविन्द मोहन, ''घोटालों का डरावना इतिहास'', **दैनिक जागरण,** पानीपत, 24 जुलाई 2015.